भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर-334 006 (राज)

ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE

Sri Ganganagar Highway, Beechwal - BIKANER-334 006 (Raj.)

E-mail- *ciah@nic.in, www.ciah.icar.gov.in.* Phone-0151-2250960 : Fax-2250145

एडवाईजरी: जून 2026 **दिनांक 04.06.2026**

किसानों के लिए शुष्क बागवानी फसलों के संरक्षण एवं उचित देखभाल करने की सलाह

1. इस समय वातावरण का तापमान घट-बढ़ रहा है लेकिन आने वाले दिनों में आँधी व गर्म लू चलने की संभावना है। इसीलिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपनी बागवानी फसलों को भीषण गर्मी से बचाने के लिए समय-समय पर जीवन रक्षक सिंचाई (Life saving irrigation) करते रहें और नमीं सरक्षण के लिए उचित पुआल जैसे घास-फूस व शेडनेट का भी उपयोग करते रहें।
2. अभी इस समय खजूर के फलों का बढ़ने का समय है और वातावरण का तापमान बढ़ने की भी संभावना है।अत: खजूर के पेड़ों में नियमित रूप से सिंचाई करते रहें ताकि फलों की अच्छी बढ़वार हो सके और भीषण गर्मी से कोई नुकसान नहीं हो। फलों पर पक्षियों का प्रकोप हो सकता है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि फलों को पक्षियों से बचाने के लिए, फल गुच्छों को जाली या एल्डी-मिल्की-यूवी प्लास्टिक बैग (थैला) से ढक दें। परंतु ध्यान रहे कि बैग का नीचला सिरा खुला रहे ताकि हवा व प्रकाश फलों को पर्याप्त मात्रा में मिलते रहें।
3. गर्मी के मौसम में अनार में माईट का प्रकोप अचानक बढ़ जाता है। यह कीट पत्तियों का रस चूसता है। जिससे पत्तियों की नीचली सतह सफ़ेद भूरे रंग की हो जाती हैं और पत्तियां मुड़ कर गिरने लगती है। इस कीट के नियंत्रण के लिए प्रोपारजाईट (57 ई.सी.) का 1.5-2.0 मिली. प्रतिलीटर अथवा ऐस्पायरोमेसिफेन (240 एस.सी.) का 0.4-0.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर बारी बारी से छिड़काव करें तथा नियमित सिंचाई करें।
4. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि अब खेजड़ी के पौधों की कटाई-छंटाई का उचित समय कटाई-छंटाई का कार्य पर पूर्ण कर लें यह अगले वर्ष उचित फलन एवं अधिक उत्पादन के लिए बहुत जरूरी है।
5. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि जून माह में अपने खेतों की गहरी जुताई करें । इसके लिए मिट्टी पलटने वाले हल जैसे-मोल्ड बोल्ड हल, डिस्क प्लाऊ या डिस्क हेरो से 8-10 इंच की गहराई तक जुताई करनी चाहिए ताकि इस समय वातावरण के उच्च तापक्रम के कारण जमीन के अंदर स्थित हानिकारक कीट पतंगों की लट, अंडा, प्युपा व हानिकारक सूक्ष्मजीव आदि संपूर्ण रूप से नष्ट हो जाये। ऐसा करने से मिट्टी की वर्षा जलधारण क्षमता भी बढ़ जाएगी एवं जल, प्रकाश, वायु व तापक्रम का संचरण भी पर्याप्त हो जाएगा जो अगली फसल के अच्छे उत्पादन के लिए अनिवार्य है। साथ ही इससे भूमि की भौतिक एवं रासायनिक सरचना में भी सुधार होगा और मिट्टी भी मुलायम व भूरभरी हो जाएगी जो कि अगली फसल की अच्छी पैदावार के लिए बहुत जरूरी है। यह जुताई लवणीय-क्षारीय मृदाओं में सुधार का भी कार्य करेगी।
6. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि खरीफ ऋतु की बागवानी फसलों की बुवाई की तैयारी हेतु खेत तैयार कर लें । जेसे ही मानसून की बरसात हो काचरी, काकडिया, ग्वारफली और अन्य शुष्क बागवानी फसलों की तैयारी कर लें। पूर्ववर्ति फसलों के अवशेषों को मृदा में अच्छी तरह से दबाने पर भी लाभ मिलता है जिससे मृदा में जीवांश पदार्थ की मात्रा बढ़ती है जो खेत की मिट्टी को उपजाऊ बनाने में मददगार साबित होती है। साथ ही ऐसा करने से मृदा में लाभदायक सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ जाती हैं जिसमें मृदा में कार्बनिक पदार्थों का अधिक विघटन के कारण मृदा की उर्वरता बढ़ती है।

(डॉ. एस.आर. मीना, रूपचंद बलाई एवं डॉ. मनप्रीत कौर)